

मामलों का विवरण

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी

बनाम

मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ओआरएस.

(2023 की सिविल अपील संख्या 5375) 23 अगस्त, 2023

[जे. के. माहेश्वरी और के. वी. विश्वनाथन, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय:खंड 2.22 के तहत।0 ((ix) निविदा शर्तों के संबंध में, अपीलार्थी को दो कार्य दिवसों की अवधि के भीतर अतिरिक्त निष्पादन प्रतिभूति प्रस्तुत करनी थी और दो दिनों की इस अवधि में किसी भी परिस्थिति में ढील नहीं दी जानी थी, चाहे वह खंड 2.22 का अर्थ हो।0(ix) कठोर और अपरिवर्तनीय के रूप में, भले ही कारण का न्याय अन्यथा आवश्यक हो।

निविदा-निविदा प्राधिकरण ने दो कार्य दिवसों की अवधि के बाद **17.03.2021** पर अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा को स्वीकार कर लिया था-स्वामित्व:

आयोजित किया गया:खंड 2.22 के तहत।0 (ix), अपीलार्थी को दो कार्य दिवसों की अवधि के भीतर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रस्तुत करनी थी-यह विवादित नहीं है कि **13.03.2021** एक शनिवार था और **14.03.2021** एक रविवार था और इसलिए दो कार्य दिवस केवल **16.03.2021** पर समाप्त हो जाएंगे-यह भी विवादित नहीं है कि राष्ट्रीयकृत बैंकों में **15.03.2021** और **16.03.2021** पर राष्ट्रव्यापी कर्मचारी हड़ताल हुई थी-अंत में, अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति **17.03.2021** पर स्वीकार की गई थी-यह एक ऐसा मामला है जहां अपीलार्थी ने जल्द से जल्द अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रदान करने की शर्त का पालन किया है, ताकि वह संभवतः अनुपालन कर सके-कि किसी को भी एक असंभव कार्य करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है-लेक्स नॉन कोगिट एड इम्पॉसिबिलिया -0 (ix) निविदा शर्तों का-उस खंड का कोई उल्लंघन नहीं हुआ था।[पैरा 6,9,23 और 24]

379 380 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 11 एस. सी. आर.

निविदा-निविदा प्राधिकरण द्वारा सत्यापन:

आयोजित किया गया:तत्काल मामले में, बैंक कर्मचारियों द्वारा हड़ताल के कारण आई. डी. 2 और आई. डी. 1 पर बैंकों के काम न करने के बारे में उचित सत्यापन के बाद, निविदा प्राधिकरण ने आई. डी. 3 पर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति को स्वीकार कर लिया था और अपीलार्थी को काम प्रदान कर दिया था-यह निर्णयों की एक लंबी पंक्ति द्वारा अच्छी तरह से तय किया गया है कि किसी परियोजना का मालिक या नियोक्ता, जिसने निविदा दस्तावेज लिखे हैं,

उसकी आवश्यकताओं को समझने और उसकी सराहना करने और उसके दस्तावेजों की व्याख्या करने के लिए सबसे अच्छा व्यक्ति है-यह भी माना गया है कि संवैधानिक अदालतों को नियोक्ता द्वारा निविदा दस्तावेजों की इस समझ और प्रशंसा को तब तक टालना चाहिए जब तक कि समझ या प्रशंसा में दुर्भावना न हो।[पैरा 25]

शहरों और अन्य संदर्भों की सूची

महंथ राम दास बनाम गंगा दास [1961] 3 एससीआर 763; राज कुमार डे और अन्य बनाम तारापद डे और अन्य (1987) 4 एससीसी 398:[1988] 1 एस. सी. आर. 118; जगदीश मंडल बनाम उड़ीसा राज्य और अन्य (2007) 14 एस. सी. सी.

517 - पर भरोसा किया।

विदर्भ सिंचाई विकास निगम और अन्य बनाम अनुज कुमार अग्रवाल और अन्य (2020) 17 एस. सी. सी. 577; टाटा सेल्युलर बनाम यूनियन

भारत सरकार, (1994) 6 एस. सी. सी. 651:[1994] 2 पूरक।एससीआर 122-प्रतिष्ठित।

हुडा और एक अन्य बनाम डॉ. बाबेश्वर कन्हार और एक अन्य (2005) 1 एससीसी 191: [2004] 6 पूरक।एससीआर 282; रोसाली वी. बनाम।ताइको बैंक और अन्य

(2009) 17 एससीसी 690:[2007] 1 एस. सी. आर. 1169; दाक्षायणी बनाम। शाखा प्रबंधक,

इंडियन ओवरसीज बैंक, ए. आई. आर. 1998 कांत 114; एफकॉन्स इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड बनाम नागपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और एक अन्य, (2016) 16 एस. सी. सी. 818: [2016] 3 एस. सी. आर. 551; यू. एफ. एल. एक्स लिमिटेड बनाम तमिलनाडु सरकार और अन्य (2022) 1 एस. सी. सी. 165-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2023 की सिविल अपील संख्या 5375।2021 के डब्ल्यू. पी. संख्या 1787 में नागपुर में बॉम्बे उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 25.03.2022 से।

381

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स।

रूप:

सत्यजीत ए देसाई, अमित के पाठक, सिद्धार्थ गौतम, अभिनव के. मुत्यालवार, गजानन एन. तीर्थकर, विजय राज सिंह चौहान, सुश्री अनघा एस. देसाई, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

प्रशांत श्रीकांत केंजाले, संदीप चोपड़े, उदय बी. दुबे, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का निर्णय/आदेश

के. वी. विश्वनाथन जे.

1. छुट्टी दे दी गई।

2. यह मामला महंथ राम दास बनाम गंगा दास, [1961] 3 एस. सी. आर. 763 में न्यायमूर्ति एम. हिदायतुल्ला (तत्कालीन विद्वान मुख्य न्यायाधीश के रूप में) के उत्कृष्ट शब्दों को याद दिलाता है। यद्यपि यह सिविल प्रक्रिया संहिता के संदर्भ में था, जो सिविल न्यायालय की शक्तियों से संबंधित है, निम्नलिखित परिच्छेद वर्तमान तथ्यों के लिए भी अध्ययन करता है:

“... इस तरह के प्रक्रियात्मक आदेश, हालांकि आकस्मिक (सशर्त आदेश अलग) हैं, सार में, टेरोरेम में हैं, ताकि विलंबित वादी खुद को क्रम में रख सकें और देरी से बच सकें। हालांकि, वे किसी न्यायालय को उस समय के भीतर होने वाली घटनाओं और परिस्थितियों पर ध्यान देने से पूरी तरह से नहीं रोकते हैं। उदाहरण के लिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि यदि अपीलार्थी ने भुगतान करने का आदेश दिए गए पूरे धन के साथ शुरुआत की थी और समय पर आया था, लेकिन पिछले दिन चोरों द्वारा उस पर हमला किया गया था और उसे लूट लिया गया था, तो वह समय बढ़ाने के लिए नहीं कह सकता था, या यह कि न्यायालय इसे बढ़ाने में असमर्थ था। इस तरह के आदेश मादियों और फारसियों के कानून की तरह नहीं हैं।”

(जोर दिया गया) 3. इस मामले में विचार के लिए जो प्रश्न उत्पन्न होता है, वह यह है कि क्या हम यहाँ के तथ्यों पर खंड 2.22 का अर्थ लगा सकते हैं। 0(ix) मादियों और फारसियों के कानून के रूप में कोमल शर्तों की-कठोर और अपरिवर्तनीय, भले ही कारण का न्याय अन्यथा आवश्यक हो?

382

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

4. खंड 2.22। 0 (ix) निम्नानुसार है:-

(ix) एल-1 लिफाफा-2 खोलने के 2 दिनों के भीतर कार्यकारी अभियंता, लोअर वर्धा परियोजना प्रभाग, वर्धा के कार्यालय में डिमांड ड्राफ्ट/बीजी या एफ. डी. आर. अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रस्तुत करेगा। 2 दिनों की इस अवधि में किसी भी परिस्थिति में ढील नहीं दी जाएगी। ऐसा करने में विफलता के परिणामस्वरूप ई. एम. डी. को जब्त कर लिया जाएगा और ठेकेदार/संयुक्त उद्यम (संयुक्त रूप से या व्यक्तिगत रूप से) को लिफाफा-2 खोलने की तारीख से दो साल के लिए जल संसाधन विभाग/वी. आई. डी. सी., नागपुर की किसी भी बोली में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया जाएगा। यदि एल-1 निर्धारित समय अवधि के भीतर अतिरिक्त

प्रदर्शन प्रतिभूति के लिए प्रस्तुत करने में विफल रहता है तो कार्यकारी अभियंता लिखित रूप में एल-2 से पूछते हैं और यदि एल-2 बोलीदाता एल-1 द्वारा उद्धृत दर पर काम करने के लिए सहमत होता है तो एल-2 बोलीदाता को स्वीकृति के लिए माना जाएगा।

(जोर दिया गया)

प्रासंगिक तथ्य

5. सवाल को जन्म देने वाले तथ्य संक्षिप्त और दिलचस्प हैं। 18.01.2021 पर, कार्यकारी अभियंता, लोअर वर्धा परियोजना प्रभाग, वर्धा ने इच्छुक बोलीदाताओं को अपनी बोली जमा करने के लिए एक निविदा जारी की। कार्य, जो रिट याचिका का विषय था

उच्च न्यायालय, "गाडेगांव मुख्य नाबालिग के भूमि विकास कार्यों (भाग-I) के निर्माण के लिए @आर. डी. 4995 एम. नंदगांव डी. 'पर था। तीन।

बोली लगाने वालों ने अपनी बोलियां प्रस्तुत कीं। तकनीकी बोली 08.02.2021 पर खोली गई थी जब अपीलार्थी और इसमें प्रथम प्रत्यर्थी (उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याची) को पात्र पाया गया था। वित्तीय बोली 12.03.2021 पर खोली गई थी और अपीलार्थी की बोली सबसे कम पाई गई थी।

6. खंड 2.22 के तहत 10(ix), जैसा कि ऊपर निर्धारित किया गया है, अपीलार्थी को दो कार्य दिवसों की अवधि के भीतर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रस्तुत करनी थी। यह विवादित नहीं है कि 13.03.2021 शनिवार था और 14.03.2021 रविवार था और इसलिए दो कार्य दिवस केवल 16.03.2021 पर समाप्त होंगे। यह भी विवादित नहीं है कि राष्ट्रीयकृत बैंकों में 15.03.2021 और 16.03.2021 पर राष्ट्रव्यापी कर्मचारी हड़ताल हुई थी।

7. अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा 17.03.2021 पर प्रस्तुत की गई थी। निविदा प्राधिकरण ने हड़ताल के अस्तित्व के बारे में खुद को संतुष्ट करने के बाद, अपीलार्थी की बोली को स्वीकार कर लिया और 07.05.2021 पर कार्य आदेश जारी किया। इसके बाद, अपीलार्थी को 24.05.2021 पर कार्य प्रारंभ करने का आदेश जारी किया गया।

383

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स। [के. वी. विश्वनाथन, जे.] 384

खंड 2.22 पर उच्च न्यायालय के निष्कर्ष 10 (ix)

8. पीड़ित, प्रथम प्रत्यर्थी ने कार्य आदेश और कार्य प्रारंभ आदेश को चुनौती देते हुए 29.04.2021 पर एक रिट याचिका का नेतृत्व किया। उस रिट याचिका को उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने उस विवादित आदेश के माध्यम से अनुमति दी है जिसमें उच्च न्यायालय ने खंड 2.22 के संबंध में निर्णय दिया है। 10(ix):

(क) वह शर्त जो खंड 2.22 में विहित है।0 (ix) अनिवार्य था क्योंकि गैर-अनुपालन के परिणाम भी निर्धारित किए गए हैं;

ख) वह खंड 2.22।0(ix) एक आवश्यक शर्त है;

ग) कि अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा प्रदान करने की अवधि पहले आठ दिन थी और इसे सचेत रूप से दो दिन तक कम कर दिया गया था, इस शर्त के साथ कि उक्त अवधि में किसी भी परिस्थिति में ढील/विस्तार नहीं किया जाएगा;

घ) कि निविदा प्राधिकरण के पास निविदा दस्तावेज के तहत किसी खंड में निर्दिष्ट समय में ढील देने/बढ़ाने की कोई शक्ति नहीं थी, जिसके सख्त अनुपालन की आवश्यकता होती है।

9. उच्च न्यायालय ने एक अन्य बोलीदाता, मेसर्स साई अनिरुद्ध कंस्ट्रक्शन, के तथ्यों का भी उल्लेख किया, जिसने एक अन्य काम के लिए अपनी बोली प्रस्तुत की थी, और एक अनुसूचित बैंक से 15.03.2021 दिनांकित डिमांड ड्राफ्ट के साथ अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रस्तुत की थी। यह प्रदर्शित करने के लिए था कि एक ही निविदा सूचना के तहत एक बोलीदाता के लिए 15.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति जमा प्रस्तुत करना संभव था।

10. उपरोक्त निर्णयों के आधार पर, उच्च न्यायालय ने अभিনিर्धारित किया कि निविदा जारी करने वाला प्राधिकरण 17.03.2021 पर अपीलार्थी से अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति स्वीकार नहीं कर सकता था, क्योंकि 17.03.2021 वित्तीय बोली शुरू होने का तीसरा कार्य दिवस था।

उच्च न्यायालय के अतिरिक्त निष्कर्षों पर

11. उपरोक्त तथ्यों को दर्ज करने के बाद, उच्च न्यायालय ने अपीलार्थी के पक्ष में कार्य आदेश जारी करने के बाद की घटनाओं पर विचार किया और निम्नानुसार पाया -

क) विचाराधीन कार्य आदेश 24.05.2021 पर जारी किया गया था और अगले 24 महीनों के भीतर अवज्ञा के सुधार की अवधि के साथ काम छह महीने के भीतर पूरा किया जाना था;

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

ख) कि अपीलार्थी ने 04.02.2022 पर कार्यकारी अभियंता को एक संदेश जारी किया था जिसमें कहा गया था कि वह आवंटित कार्य को पूरा नहीं कर सकता है और उसने 31.03.2023 तक का समय मांगा था।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, उच्च न्यायालय ने निविदा प्राधिकरण द्वारा कोई विचार व्यक्त किए बिना और विस्तार की मांग करने वाले पत्रों में दिए गए किसी भी कारण पर चर्चा किए बिना निष्कर्ष निकाला कि अपीलार्थी समय सीमा को पूरा करने में सक्षम नहीं था। उच्च न्यायालय ने

आगे कहा कि अपीलार्थी को समय सीमा का पालन नहीं करने के लिए उचित नहीं ठहराया गया था। इसलिए, उच्च न्यायालय ने इस आधार पर अनुच्छेद 226 के तहत मामले में हस्तक्षेप किया कि यह जनहित को प्रभावित करता है।

12. उच्च न्यायालय को कार्य पूरा करने की समय सीमा और अपीलार्थी द्वारा मांगी गई अवधि बढ़ाने के संबंध में प्रश्न में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था क्योंकि वह एक ऐसा मामला था जो उसमें उत्पन्न होने वाले तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करता था। यह अधिकारियों को वहाँ उत्पन्न होने वाले असंख्य तथ्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना था। यहां तक कि विवेकाधीन अधिकार क्षेत्र के प्रयोग की आवश्यकता के बारे में निर्णय लेने के लिए, उच्च न्यायालय को पूर्ण तथ्यों को उसके सामने रखे बिना इस पहलू में कदम नहीं उठाना चाहिए था। किन परिस्थितियों में विस्तार की मांग की गई थी और प्राधिकरण ने इसे किस दृष्टिकोण से लिया है, इस बारे में हम भी पूरी तरह से अनजान हैं। उच्च न्यायालय को केवल इस प्रश्न की जांच के लिए खुद को आश्वस्त करना चाहिए था कि क्या 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा की स्वीकृति और कार्य आदेश के परिणामी मुद्दे को कानून में उचित ठहराया गया था या नहीं। यह पता चलने के बाद कि यह न्यायसंगत नहीं था, इसे वहीं रुकना चाहिए था और इस मुद्दे में नहीं पड़ना चाहिए था, क्योंकि पूरे तथ्य रिकॉर्ड पर उपलब्ध नहीं थे।

खंड 2.22 के कथित उल्लंघन पर। 0 (ix)

13. इस पृष्ठभूमि में, जो प्राथमिक प्रश्न उत्पन्न होता है, वह यह है कि क्या उच्च न्यायालय को इस आधार पर कार्य आदेश को रद्द करने में न्यायसंगत ठहराया गया था कि निविदा प्राधिकरण ने खंड 2.22 का उल्लंघन किया था। 0(ix) 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा स्वीकार करके?

14. हमने अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता श्री अमित के. पाठक, प्रथम प्रत्यर्थी के विद्वान अधिवक्ता श्री प्रशांत श्रीकांत केंजाले और निविदा प्राधिकरण के विद्वान अधिवक्ता श्री उदय बी. दुबे को सुना है।

385

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स। [के. वी. विश्वनाथन, जे.] 386

15. स्वीकार किए गए तथ्य यह हैं कि 12.03.2021 पर अपीलार्थी के एल 1 बोलीदाता (सफल बोलीदाता) होने की घोषणा के बाद, वित्तीय बोली शुरू होने के दो दिनों के भीतर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति जमा की जानी थी। मान लीजिए, 12.03.2021 शुक्रवार होने के कारण, 13.03.2021 शनिवार था और 14.03.2021 रविवार था। इन दोनों दिनों में बैंक की छुट्टियां थीं। यहां तक कि पहले प्रत्यर्थी के पास भी ऐसा कोई मामला नहीं है कि इन दिनों अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा दी जा सकती थी।

16. उच्च न्यायालय ने, विवादित आदेश में, शाखा प्रबंधक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र-अपीलार्थी के बैंक के संचार पर ध्यान दिया, जिसने इस तथ्य पर विवाद नहीं किया था कि 15.03.2021 और 16.03.2021 पर बैंक कर्मचारियों की हड़ताल हुई थी जिसके कारण इन दिनों कोई बैंकिंग लेनदेन नहीं हुआ था। बार में यह भी विवादित नहीं था कि वास्तव में उन दो दिनों में राष्ट्रीयकृत बैंकों के बैंक कर्मचारियों की हड़ताल थी। तर्क केवल यह था कि अनुसूचित बैंक खुले थे और एक मेसर्स साई अनिरुद्ध कंस्ट्रक्शन ने एक अनुसूचित बैंक के माध्यम से उसी निविदा सूचना के तहत दूसरे काम के लिए अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति प्रस्तुत की थी। 17. अपीलार्थी ने उच्च न्यायालय के साथ-साथ अपील में हमारे सामने दिए गए आधारों के समक्ष अपने जवाब में इस बिंदु का यह कहते हुए विरोध किया कि अपीलार्थी का किसी भी अनुसूचित बैंक में कोई खाता नहीं था। यह अनुमान लगाया गया था कि अपीलार्थी बैंक ऑफ महाराष्ट्र में खाते का रखरखाव कर रहा था। अपनी प्रस्तुति को सुदृढ़ करने के लिए, अपीलार्थी ने यह भी प्रस्तुत किया था कि निविदा दस्तावेज के प्रपत्र-1 में, जिसमें बोलीदाता की बुनियादी जानकारी के बारे में बताया गया था, अपीलार्थी ने अपने बैंक खाते के विवरण के साथ बैंक का नाम और पता का उल्लेख किया था। यह आगे प्रस्तुत किया गया कि निविदा पुस्तिका के उपक्रम IV में कहा गया था कि बोलीदाता को बोलीदाता के स्वामित्व वाले बैंक खाते के माध्यम से बकाया राशि जमा करने और प्रदर्शन प्रतिभूति जमा करने के संबंध में वचन देना था। यह अनुमान लगाया गया था कि इस प्रकार अपीलार्थी बैंक लेनदेन करने के लिए किसी अन्य खाते का उपयोग नहीं कर सकता था।

18. यह तथ्य भी विवाद में नहीं है कि राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों के बीच हड़ताल हुई थी। यह भी विवादित नहीं है कि अपीलार्थी का खाता बैंक ऑफ महाराष्ट्र में था और यह वह खाता था जिसका खुलासा निविदा दस्तावेज के साथ मूल जानकारी के हिस्से के रूप में किया गया था। यह भी विवादित नहीं है कि बोली लगाने वालों ने एक वचन दिया है कि बकाया राशि जमा और प्रदर्शन प्रतिभूति का भुगतान बोली लगाने वाले के स्वामित्व वाले बैंक खाते के माध्यम से किया जाएगा। वे नहीं कर सके।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 11 एस सी आर।

इसे किसी अन्य बैंक के माध्यम से किया है। अपील के अभिलेखों से यह भी स्पष्ट है कि प्रथम प्रत्यर्थी द्वारा अधीक्षण अभियंता को की गई शिकायत पर अधीक्षण अभियंता ने

12.04.2021 पर कार्यकारी अभियंता को एक पत्र लिखकर शिकायत पर उनकी टिप्पणी मांगी थी। शिकायत अपीलार्थी द्वारा खंड 2.22 के अनुसार निर्धारित दो दिनों के बाद अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति जमा करने के बारे में थी। 10 (ix)। इसमें प्रथम प्रत्यर्थी की शिकायत में यह एकमात्र शिकायत थी। 19.04.2021 पर, कार्यकारी अभियंता ने अधीक्षण अभियंता को लिखे अपने पत्र में उल्लेख किया कि 13.03.2021 शनिवार था और 14.03.2021 रविवार था और यह भी स्वीकार किया कि 15.03.2021 पर चूंकि सभी राष्ट्रीयकृत बैंक हड़ताल के कारण काम नहीं कर रहे थे, इसलिए अपीलार्थी ने उनसे 17.03.2021 तक समय बढ़ाने का

अनुरोध किया था। उन्होंने आगे कहा कि चूंकि 15.03.2021 और 16.03.2021 वे दिन थे जब हड़ताल के कारण बैंक काम नहीं कर रहे थे, और चूंकि अपीलार्थी ने 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति जमा की थी, इसलिए जमा करना उचित प्रतीत होता है और अपीलार्थी की निविदा स्वीकार करने का अनुरोध किया गया था। इतना ही नहीं, अपीलार्थी बैंक के शाखा प्रबंधक ने अपने 11.05.2021 के पत्र में इस बात से भी इनकार नहीं किया है कि 15.03.2021 और 16.03.2021 पर बैंक कर्मचारियों की हड़ताल हुई थी।

19. यह एक ऐसा मामला है जिसमें अपीलार्थी ने जल्द से जल्द अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा प्रदान करने की शर्त का पालन किया है, जिसका वह संभवतः पालन कर सकता है। कि किसी को भी प्रदर्शन करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है

असंभव कार्य-लेक्स नॉन कोजिट एंड इम्पॉसिबिलिया-एक अच्छी तरह से स्वीकृत कानूनी कार्य है।

सिद्धांत।

20. राज कुमार डे और अन्य न्यायालय तारापद डे और

अन्य, **(1987) 4 एस. सी. सी. 398**, उस मामले के तथ्यों को उद्धृत, अनुमोदित और लागू करते हुए, निम्नलिखित कहना था:

“6. ... दूसरा सिद्धांत है लेक्स नॉन कोजिट एंड इम्पॉसिबिलिया (ब्रूम का कानूनी)।

मैक्सिमस-पृष्ठ 162)-कानून किसी व्यक्ति को वह करने के लिए मजबूर नहीं करता है जो वह संभवतः नहीं कर सकता है। सर डब्ल्यू. स्कॉट ने कहा कि स्वयं कानून और उसके प्रशासन को राजस्व कानूनों के कथित उल्लंघन के संदर्भ में, वह स्वीकार करना चाहिए जिसके लिए सब कुछ झुकना चाहिए, आवश्यकता के लिए; कानून, अपने सबसे सकारात्मक और आकस्मिक आदेशों में, अस्वीकार करने के लिए समझा जाता है, जैसा कि यह अपने सामान्य सूत्र में करता है, बाध्यकारी असंभवताओं के सभी इरादे, और कानूनों के प्रशासन को सभी विशेष मामलों के विचार में उस सामान्य अपवाद को अपनाना चाहिए।”

(जोर दिया गया)

387

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स। [के. वी. विश्वनाथन, जे.] 388

21. एक ही सिद्धांत को लागू करते हुए और इसके सिद्धांत को उजागर करते हुए, यह न्यायालय हुडा और एक अन्य बनाम डॉ. बाबेश्वर कन्हारंद एक अन्य (2005) 1

एस. सी. सी. 191 ने कहा कि न्याय और समीचीनता के प्रत्येक विचार के लिए आवश्यक होगा कि स्वीकृत सिद्धांत जो सामान्य खंड अधिनियम की धारा 10 के अंतर्गत आता है, उन मामलों में लागू किया जाना चाहिए जहां यह अन्यथा नहीं है।

लागू करें [पैरा 5]।

[illegible]

“4. उस आधार पर यदि हम कानून की व्याख्या करते हैं, हालांकि कानून द्वारा निर्धारित समय को बढ़ाने के लिए न्यायालय में कोई शक्ति नहीं है, फिर भी अभिव्यक्ति तुरंत अपने दायरे में ऐसी स्थिति लेने में सक्षम है जहां नीलामी आयोजित होने के दिन कोई कार्य करना असंभव है, जैसा कि सावित्रीमा मामले (आई. एल. आर. 1973 कांत 1277) में हुआ था, जब बैंक खुद हड़ताल पर था और बैंक में कोई जमा नहीं किया जा सकता था या न्यायालय के घंटों के बाद नीलामी-बिक्री होने की स्थिति में, उस संबंध में रसीद आदेश प्राप्त नहीं किया जा सकता है। ऐसी राशि रसीद आदेश प्राप्त करने के बाद ही जमा की जा सकती है। यदि अगले दिन भी छुट्टी होती है, तो उसके तुरंत बाद आने वाला दिन जो एक कार्य दिवस है, वह दिन होगा जिस दिन इस तरह का कार्य करना होगा। यदि कोई अन्य व्याख्या दी जाती है तो यह कानून के उद्देश्य को ही कमजोर कर देगा।”

23. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, हमें यह मानने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति जमा करना खंड 2.22 के उचित अनुपालन में था। 10 (ix) निविदा शर्तों का। उस खंड का कोई उल्लंघन नहीं हुआ था।

[2023] 11 एस सी आर।

24. निर्णय लेने वाले अधिकारी, यहाँ के निविदा प्राधिकरण की तरह, निर्विवाद जमीनी वास्तविकताओं और मजबूर करने वाली आवश्यकताओं की ओर आंखें नहीं मूंद सकते थे, जैसे कि यहाँ खुद को प्रस्तुत किया गया था। आखिरकार, वे हाथीदांत के मीनारों में नहीं रहते हैं।

25. इस मामले में, बैंक कर्मचारियों द्वारा हड़ताल के कारण 15.03.2021 और 16.03.2021 पर बैंकों के काम न करने के बारे में उचित सत्यापन के बाद, निविदा प्राधिकरण ने 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन प्रतिभूति स्वीकार कर ली थी और अपीलार्थी को काम सौंप दिया था। यह निर्णयों की एक लंबी पंक्ति द्वारा अच्छी तरह से तय किया जाता है कि किसी परियोजना का मालिक या नियोक्ता, निविदा दस्तावेजों को लिखने के बाद, इसकी आवश्यकताओं को समझने और उनकी सराहना करने और इसके दस्तावेजों की व्याख्या करने के लिए सबसे अच्छा व्यक्ति है। यह भी अभिनिर्धारित किया गया है कि संवैधानिक न्यायालयों को नियोक्ता द्वारा निविदा दस्तावेजों की इस समझ और प्रशंसा को तब तक टालना चाहिए जब तक कि समझ या प्रशंसा में दुर्भावना या विकृति न हो। [एफकॉन्स देखें]

इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड बनाम नागपुर मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और

एक अन्य, **(2016) 16 एस. सी. सी. 818** और यू. एफ. एल. एक्स लिमिटेड बनाम तमिलनाडु सरकार और अन्य, **(2022) 1 एस. सी. सी. 165)**।

26. इस मामले में, कोई दुर्भावनापूर्ण आरोप नहीं लगाया गया है और निविदा प्राधिकरण द्वारा अपनाई गई व्याख्या को विकृत नहीं कहा जा सकता है। हम यह भी नहीं मानते कि 17.03.2021 पर अतिरिक्त प्रदर्शन सुरक्षा को स्वीकार करने और कार्य आदेश जारी करने का निर्णय मनमाना और तर्कहीन था। हम यह भी नहीं मानते कि यह एक ऐसा निर्णय है, जिस पर कोई भी जिम्मेदार प्राधिकारी उचित रूप से और कानून के अनुसार कार्य नहीं कर सकता था। तथ्यों पर, कार्य के पुरस्कार द्वारा जनहित के प्रति पूर्वाग्रह का कोई मामला भी नहीं बनाया गया है। ऐसी परिस्थितियों में, उच्च न्यायालय को वर्तमान मामले में निविदा की स्वीकृति और कार्य आदेश जारी करने में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था।

27. प्रथम प्रत्यर्थी के विद्वान अधिवक्ता ने अपनी लिखित दलीलों में विदर्भ सिंचाई मामले में इस न्यायालय के फैसले पर भरोसा किया।

विकास निगम और अन्य बनाम अनुज कुमार अग्रवाल और

अन्य, **(2020) 17 एससीसी 577**। हमने उक्त निर्णय पर सावधानीपूर्वक विचार किया है। उस मामले में, बैंक गारंटी जो चालीस महीने के लिए दी जानी चाहिए थी, केवल छह महीने के लिए दी गई थी। वर्तमान मामले के तथ्य पूरी तरह से अलग हैं और इस प्रकार, उक्त निर्णय स्पष्ट रूप से अलग है।

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स। [के. वी. विश्वनाथन, जे.] 390

28. दूसरा फैसला टाटा सेल्युलर बनाम भारतीय संघ, (1994) 6 एस. सी. सी. 651 में दिया गया है। यहाँ के तथ्यों पर, यह प्रथम प्रत्यर्थी की सहायता नहीं करता है।

29. हम प्राधिकरण द्वारा निविदा स्वीकार करने और अपीलार्थी को कार्य प्रदान करने में कुछ भी गलत नहीं पाते हैं।

प्रथम प्रत्यर्थी द्वारा उठाए गए अन्य आधार

30. उच्च न्यायालय के समक्ष रिट याचिका में किए गए संशोधनों के माध्यम से, इसमें प्रथम प्रत्यर्थी द्वारा कुछ अतिरिक्त शिकायतें उठाई गईं। वे थे: पहला यह कि अपीलार्थी ने केवल तीन वर्षों के लिए आयकर विवरणी की स्वीकृति दी थी, न कि पांच वर्षों के लिए और दूसरा पुराने साझेदारी विलेख और श्री डी. गुरु महेश्वर रेड्डी के पिता श्री देवेर्दी चिन्ना गुरुवी रेड्डी के पावर ऑफ अटॉर्नी का नेतृत्व किया गया था। यह आरोप लगाया गया था कि पिता की मृत्यु हो गई थी और एक मृत व्यक्ति के पावर ऑफ अटॉर्नी का नेतृत्व किया गया था। अपीलार्थी के नेतृत्व में जवाब में इन कथनों का खंडन किया गया है।

31. पांच वर्षों के लिए आय-कर के भुगतान की स्वीकृति की आवश्यकता के साथ, दिया गया उत्तर यह था कि यह स्वयं केवल तीन वित्तीय वर्षों के लिए अस्तित्व में था। अन्यथा भी, हमें निर्दिष्ट सी खंड नहीं दिखाया गया है जिसमें पांच वर्षों के लिए आयकर विवरणी की स्वीकृति की आवश्यकता होती है। किसी भी मामले में, निविदा प्राधिकरण ने आवश्यक अनुपालनों के बारे में खुद को संतुष्ट करने के बाद काम को सम्मानित किया है। उच्च न्यायालय ने भी इन पहलुओं पर निर्णय नहीं दिया है। इसलिए, इस आधार पर भी, कार्य आदेश को अपास्त करना नहीं रखा जा सकता है।

32. पुनर्गठित साझेदारी विलेख और पिता के पावर ऑफ अटॉर्नी से संबंधित प्रस्तुतिकरण के संबंध में, अपीलार्थी ने काउंटर में यह कहते हुए इसकी व्याख्या की है:

क) कि श्री डी. गुरु महेश्वर रेड्डी शुरुआत से ही हमेशा एक भागीदार थे; कि उनके पिता की मृत्यु महामारी के बीच में 05.05.2020 पर हुई थी;

ख) कि सितंबर, 2020 में आंध्र से मूल स्थान से वापस आने के बाद साझेदारी का पुनर्गठन किया गया था और पुनर्गठित साझेदारी विलेख 23.10.2020 पर साझेदारी फर्मों के पंजीयक, औरंगाबाद के कार्यालय को प्रस्तुत किया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

ग) कि महामारी और लॉकडाउन के कारण, पुनर्गठित साझेदारी विलेख की प्रमाणित प्रतियां निविदा प्रपत्र जमा करने तक जारी नहीं की गई हैं।

घ) प्रस्तुत साझेदारी विलेख में डी. गुरु महेश्वर रेड्डी का नाम था और वह एफ. आई. आर. एम. के पंजीकरण से ही एक भागीदार थे।

इसलिए, यह तर्क दिया गया कि पहले के साझेदारी विलेख और पावर ऑफ अटॉर्नी का अधिकार अयोग्य ठहराने की निविदा प्रक्रिया की शर्त को दूषित नहीं करता है। स्पष्टीकरण को ध्यान में रखते हुए और अतिरिक्त रूप से इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि निविदा प्राधिकरण को इसमें कोई अवैधता नहीं मिली है और उच्च न्यायालय ने इस मुद्दे की जांच करने के लिए यह नहीं सोचा है, हम इन अतिरिक्त आधारों में योग्यता नहीं रखते हैं।

33. अलग होने से पहले, हमें जगदीश मंडल बनाम उड़ीसा राज्य और अन्य, (2007) 14 एस. सी. सी. 517 में इस न्यायालय द्वारा दिए गए सावधानी के शब्दों की याद दिलानी चाहिए। न्यायालय की ओर से बोलते हुए, न्यायमूर्ति आर. वी. रवींद्रन ने कहा:

“22. ... काल्पनिक शिकायतों, घायल गर्व और व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता के साथ असफल निविदाकारों द्वारा किए गए प्रयासों का विरोध किया जाना चाहिए, कुछ तकनीकी/प्रक्रियात्मक उल्लंघन या स्वयं के प्रति कुछ पूर्वाग्रह के मोलहिल से पहाड़ बनाने के लिए, और न्यायिक समीक्षा की शक्ति का प्रयोग करके अदालतों को हस्तक्षेप करने के लिए राजी करना चाहिए। इस तरह के हस्तक्षेप, या तो अंतरिम या वित्तीय, सार्वजनिक कार्यों को वर्षों तक रोक सकते हैं, या हजारों और लाखों लोगों को राहत और सहायता में देरी कर सकते हैं और परियोजना की लागत को कई गुना बढ़ा सकते हैं। इसलिए, न्यायिक समीक्षा की शक्ति का प्रयोग करते हुए निविदा या संविदात्मक मामलों में हस्तक्षेप करने से पहले न्यायालय को निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए: (i) क्या प्राधिकरण द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया या निर्णय दुर्भावनापूर्ण है या किसी का पक्ष लेने का इरादा है;

या

क्या अपनाई गई प्रक्रिया या लिया गया निर्णय इतना मनमाना और तर्कहीन है कि न्यायालय कह सकती है: “निर्णय ऐसा है कि कोई भी जिम्मेदार प्राधिकारी जो उचित रूप से और प्रासंगिक कानून के अनुसार कार्य कर रहा हो, उस तक नहीं पहुंच सकता था।

((ii) क्या जनहित प्रभावित होता है।

यदि उत्तर नकारात्मक हैं, तो अनुच्छेद 226 के तहत कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।....”

मेसर्स ओम गुरुसाई कंस्ट्रक्शन कंपनी बनाम मेसर्स वी. एन. रेड्डी एंड ऑर्स। [के. वी. विश्वनाथन, जे.

34. तदनुसार, आक्षेपित आदेश को अपास्त करना दिया जाता है और हम निर्देश देते हैं कि बॉम्बे, नागपुर पीठ, नागपुर में उच्च न्यायालय के निर्णय पर 2021 की रिट याचिका संख्या 1787 खारिज हो जाएगी। अपील की अनुमति है। लागत के बारे में कोई आदेश नहीं।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोटः

अपील की अनुमति दी गई।

अंकित ज्ञान